प्रातः क्लास 28-6-68 ओमशान्ति पिताश्री स्वर्ग की बादशाही याद है?

ओमशान्ति। ओमशान्ति कहने से ही बच्चों को जो नालेज मिली है वह सारी बुधि में आ जानी चाहिए। बाप की भी बुधि में है ना। कौन सी नालेज है? इस मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ जिसको कल्प-वृक्ष भी कहते हैं उनकी उत्पति पालना फिर विनाश कैसे होता है यह तो सारा बुधि में आ जाना चाहिए। जैसे वह जड़ झाड़ होता है, यह है चैतन्य। बीज भी चैतन्य। उनकी महिमा भी गाते हैं वह सब है चैतन्य है। अर्थात झाड़ के आदि मध्यअन्त का राज़ समझा सकते हैं। अभी वह निराकार कैसे समझावे जब तक कि शरीर न हो। मनुष्य मात्र तो बिल्कुल जानते ही नहीं। कोई की भी आक्युपेशन को जानते ही नहीं। प्रजापिता ब्रह्मा के आक्युपेशन को भी जानना चाहिए ना। ब्रह्मा को कोई याद नहीं करते हैं। जानते ही नहीं। अजमेर में ब्रह्मा का मंदिर है। त्रिमूर्ति चित्र छपाते हैं उनमें भी ब्रह्मा विष्णु शंकर है। यह भी कहते हैं ब्रह्मा देवताए नमः। यह तो सभी की बुधि में आता है ना। तुम बच्चे जानते हो इस समय ब्रह्मा को देवता नहीं कहा जाता। जब सम्पूर्ण बने तब ही देवता कहा जाये। सम्पूर्ण बन चले जाते हैं सूक्ष्मवतन। यह कौन बैठ सुनाते हैं। बाप कहते हैं पिणे (तुम्हारे बाप) का क्या नाम है? किस से पूछते हैं। आत्मा से। आत्मा कहते है हमारा बाबा जिनको मालूम है कि किसने कहा वह तो प्रश्न पूछ न सके। अभी बच्चे समझ तो गये हैं। बरोबर दो बाप सभी का है। भक्ति मार्ग में। फिर ज्ञान-मार्ग में शुरु होता है। ज्ञान तो एक बाप ही देते हैं। अभी तुम बच्चे समझते होंगे यह शिव बाबा का रथ है। बाबा इस रथ द्वारा हमको ज्ञान सुनाते हैं। एक तो यह है जिसमानी बाप का रथ। फिर रूहानी बाप का भी रथ है। उस रूहानी बाप की ही महिमा है सुख का सागर है ज्ञान का सागर है ... पहले2 तो यह बुधि में रहेगा यह बेहद का बाप है जिससे बेहद का वरसा मिलता है। पावन दुनिया का मालिक बनते हैं। बुलाते भी इसलिए हैं हे पतित पावन आओ। निराकार को ही बुलाते हैं। साकार को नहीं बुलाते। और आत्मा ही पुकारती है। अभी आत्मा जानती है वह पतित पावन बाप इस तन में आया है। यह भूलना न चाहिए। इस समय बाप आये हैं यह है नई बात। शिव-जयन्ति भी हरवर्ष मनाई जाती है। तो जरूर वह एक बार आते हैं। ल०ना० सतयुग में थे। इस समय नहीं हैं। तो जरूर समझना चाहिए इन्हों ने पुनर्जन्म लिया होगा। 16कला से 14 कला, 12 कला में आये होंगे। यह तुम्हारे बिगर दुनिया में और कोई नहीं जानते हैं। तुम जानते हो भारत 16 कला सम्पूर्ण था। जब कि इन ल०ना० का राज्य था। तुम बच्चों की बुधि में है बरोबर सतयुग में इनका राज्य था। और सिर्फ भारत ही था। सतयुग को कहा जाता है नई दुनिया। वहां सभी कुछ नया ही नया है। देवी-देवता नाम भी कहा जाता है। वही देवताएं जब वाममार्ग में जाते हैं तो फिर उनको नया भी नहीं, तो देवता भी नहीं कह सकते। वाम मार्ग में जाते हैं तो पुराने बन जाते हैं। 2। जन्म बाद फिर वाम मार्ग में चले जाते हैं। 10 कला से 14 कला, फिर नीचे उतरते जाते हैं। सिर्फ उन्हों का पावित्रता की निशानी जो है देवता वह नहीं कह सकते। कोई भी ऐसे नहीं कहेंगे कि हम उनके वंशावली के हैं। अगर अपने को उस वंशावली के समझते तो फिर उन्हों की महिमा अपनी निन्दा क्यों करते। महिमा जब गाते हैं तो जरूर उनको पवित्र अपने को अपवित्र समझते हैं। बाप ने समझाया है पावन से फिर पतित बनते हैं। पुनर्जन्म भी लेते हैं। जो भी पावन है वह फिर पतित जरूर बनते हैं। पहले2 शुरु में जो पावन था वही फिर पतित बना है। तुम जानते हो पावन से अभी पतित बने हैं। यह रथ भी पतित है। रथ की कोई महिमा नहीं होती। तुम स्कूल में पढ़ते हो उन में नम्बरवार फर्स्ट सेकण्ड थर्ड क्लास तो होते हैं। अभी बच्चे समझते हैं हमको तो बाप पढ़ाते हैं। तब तो आते हैं ना। नहीं तो यहां आने का क्या दरकार है। यह कोई गुरु महात्मा महापुरुष आदि नहीं है। यह तो साधारण मनुष्य तन है सो भी बहुत पुराना है। बहुत जन्मों के अन्त में प्रवेश करता हूं। और तो कोई इनकी महिमा नहीं। सिर्फ मैं इस शरीर में प्रवेश करता हूं तब ही इनका नाम होता है। नहीं तो प्रजापिता ब्रह्मा कहां से आया। मनुष्य मुझते तो जरूर हैं ना। यह भी बाप बैठ समझाते हैं। तुमको भी बाप ने समझाया है तब समझा

हो। ब्रहमा का बाप कौन। ब्रहमा विष्णु शंकर है ना। उनका भी बाप जरूर होगा। ब्रहमा विष्णु शंकर भी नीचे तवके में है ना। जरूर कहेंगे इन्हों का रचयिता शिव बाबा ही है। बुधि ऊपर चली जाती है। परमपिता परमात्मा जो परमधाम में रहते हैं उनकी यह रचना है। ब्रहमा विष्णु शंकर उन्हों का आक्युपेशन अलग2 है। कोई आपस में 3-4 होते हैं सभी का आक्युपेशन अपना2 होता है। पार्ट हरेक का अपना2 है। जितने भी 500करोड़ एक्टर्स हैं आत्माएं तो है ना। यह भी समझते हैं एक शरीर न मिले दूसरे से। आत्माएं तो सभी है एक जैसे। बाकी शरीर न मिले एक दूसरे से। यह वन्डरफुल बातें समझ जाते हैं। कितने ढेर मनुष्य हैं। अभी चक्र पूरा हुआ है। अन्त है ना। फिर तुम सतयुग तरफ जावेंगे। फिर से चक्र रिपीट होने का है। बाप यह सभी बातें भिन्न2 प्रकार से समझाते रहते हैं। नई बात नहीं। कहते हैं कल्पपहले भी समझाया था। बहुत याद करना है। तुम भी बाप के लवली बच्चे हो ना। बाप को याद करते ओय हो। पहले तुम एक शिव की ही भक्ति करते थे। फिर व्यभिचारी भक्ति होने कारण तुम्हारी वृत्ति भी नीचे उतरती आई है। पहले सभी एक की पूजा करते थे। भेद-भाव की बात ही नहीं। अभी तो कितना भेद-भाव है। यह राम का भक्त है, यह कृष्ण का भक्त है। राम के भक्त धूप जगाते हैं तो कृष्ण का भक्त नाक बन्द कर लेते हैं। ऐसी कुछ बात शास्त्रों में है। वह समझते हैं हमारा देवता बड़ा। वह समझते हैं हमारा कृष्ण देवता बड़ा। वह कहते हमारा भगवान बड़ा। दो भगवान समझ लेते हैं। तो रांग होने कारण सभी अनराईटियस ही काम करते हैं। उनको कृष्ण से दुश्मनी, उनको राम से दुश्मनी। दुश्मनी करते2 क्या नतीजा निकला है। राम वालों ने राम को बड़ा, कृष्ण को छोटा कर दिया है। राम को त्रेता में कृष्ण को द्वापर में ले गये हैं। समझते थोड़े ही हैं कि यह क्या करते हैं। बुधि है नहीं। यह बात बाप ही समझाते हैं। भक्ति को कहा जाता है अज्ञान। भक्ति भक्ति है। ज्ञान है ज्ञान। ज्ञान सागर एक ही बाप है। बाकी वह सभी हैं भक्ति के सागर। ज्ञान से सदगति भक्ति से दुर्गति होती है। भक्ति के भी सागर हैं। बहुत भक्ति करने वाले हैं। इतने भक्ति में मस्त रहते हैं जो कह देते भगवान का कोई नामरूप ही नहीं हैं। वह पत्थर भितर सभी में है। इतना बिल्कुल ही नीचे गिर पड़ते हैं। भक्ति ने भी कामल की है। यह भी बाप समझाते हैं कि यह कोई नई बात नहीं। अभी तुम हो ज्ञानवान। अपना परिचय बाप ने खुद ही दिया है। सारे इस चक्र का भी परिचय दिया है। जो और कोई दे न सके। इसलिए बाप कहते हैं तुम बच्चे हो स्वदर्शनचक्रधारी। परमपिता तो एक ही है। बाकी सभी बच्चे बच्चे ही हैं। परमपिता अपन को कोई कह न सके। परमपिता तो पुनर्जन्म में आता नहीं। लौकिक बाप को भी परमपिता नहीं कहेंगे। अपन को भी नहीं कहेंगे। यह सन्यासी लोग शिवोहम् कहते हैं तो जैसे कि अपन को परम पिता कहें कहेंगे। परन्तु मनुष्य तो परमात्मा हो न सके। जो अच्छे समझदार मनुष्य हैं वह समझते हैं यह कितना बड़ा ड्रामा है। इन में जो एक्टर्स हैं वह सदैव पार्ट बजाते ही रहते हैं। अविनाशी। वह छोटे2 नाटक तो विनाश होते हैं। यह है अनादी अविनाशी। कब बन्द होने वाला नहीं है। वन्डर है ना। कितनी छोटी आत्मा है उनको कितना बड़ा पार्ट मिला हुआ है शरीर लेने और छोड़ने का। और पार्ट बजाने का। यह बातें कोई शास्त्रों में नहीं हैं। अगर इनको किसी गुरु ने सुनाया होता तो उनके और भी फालोअर्स होते ना। सिर्फ एक फालोअर्स क्या काम का। फालोअर तो वह जो पूरा फालो करे। इनकी ड्रेस आदत तो वह है नहीं। कौन कहेंगे यह शिष्य है। यह तो बाप बैठ पढ़ाते हैं। बाप की ही फालो करना है। जैसे बारात होती है ना। शिव की भी बारात कहते हैं। बाबा कहते हैं यह हमारी बारात है। तुम सभी भक्तियां हो मैं हूं भगवान। तुम सभी ब्राईड्स हो मैं हूं ब्राईड ग्रुम। बाबाआया हुआ है तुम सभी को श्रृंगार कर ले जाने। तो कितनी खुशी होनी चाहिए। अभी तुम सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त को भी जानते हो। और कोई जानते ही नहीं। वह तो सभी नेती2 कह देते हैं। तो नास्तिक ठहरे ना। जो जानते हैं वह हैं आस्तिक। तुम ब्राह्मणों के सिवाय सारी दुनिया में कोई आस्तिक है नहीं। तुम बाप को याद करते2 पवित्र बन जाते हो तो पवित्र राजाई मिलती है। बाप समझाते हैं मैं आता हूं अन्त में। मुझे बुलाते ही हो पावन दुनिया की स्थापना करने और पतित दुनिया का विनाश करने

आओ। इसलिए महाकाल भी कहते हैं। महाकल के भी मंदिर होते हैं। काल की तो देखो। शिव को काल कहेंगे ना। बुलाते हैं कि आकर पावन बनाओ। आत्माओं को ले जाते हैं। बेहद का बाप कितने टैर को लेने लिए आते हैं। काल काल महाकाल। सभी आत्माओं को पवित्र बुल2 बना देते हैं। गुल2 बन जाये तो फिर बाप भी ले जायेंगे गोद में। अगर पवित्र बनेंगे नहीं तो सजा खानी पड़ेगी। फर्क तो रहता है ना। पाप रह जाते हैं तो फिर सजा भी खानी पड़े और पद भी ऐसा। इसलिए बाप समझाते हैं मीठे2 बच्चे बहुत ही मीठे बनो। कृष्ण सभी को कितना मीठा लगता है। कितना प्रेम से कृष्ण को झुलाते हैं। ध्यान में कृष्ण को छोटा बच्चा देख गोद में बिठा कर प्यार करते हैं। बैकुण्ठ में चले जाते हैं। वहां कृष्ण को चैतन्य रूप में देखते हैं। भक्ति मार्ग में भी सा० होते हैं। अभी तुम बच्चे समझते हो सचमुच बैकुण्ठ आ रहा है। हम भविष्य में यह बनेंगे। श्रीकृष्ण पर जो कलंक लगाये हैं वह सभी गलत है। तुम बच्चों को भी शुरू में बहुत सा० हुये थे। फिर पिछाड़ी में भी बहुत करेंगे। ज्ञान कितना रमणिक है। कितनी खुशी रहती है। भक्ति में तो कुछ भी खुशी नहीं रहती है। भक्ति वाले को यह थोड़े ही मालूम रहता है ज्ञान में कितना सुख है। भेंट तो कर न सकें। तुम बच्चों को पहले यह नशा चढ़ा रहना चाहिए। यह ज्ञान सिवाय बाप के कोई भी ऋषि-मुनि सन्यासी आद दे न सकें। भक्ति करते2 पतित बन पड़े हैं। पतित किसने बनाया, रावण सम्प्रदाय ने। गुरू लोग तो सिर्फ मुक्ति जीवन मुक्ति का रास्ता बता न सकें। एक ही बाप सभी की सद्गति करने वाला है। बाप कहते हैं मैं हर 5000 वर्ष बाद आता हूं। तुमको ड्रामा का राज़ बैठ बताता हूं। अभी तुम समझते हो कोई भी मनुष्य गुरू हो नहीं सकता। जो कहे कि आत्माओं बच्चों मैं तुमको समझाता हूं। बाप को तो बच्चे 2 कहने की ही प्रैक्टीस है। जानते हैं यह हमारी रचना है। यह बाप भी कहते हैं मैं सभी का रचयिता हूं। तुम सभी भाई2 हो। उनको पार्ट मिला हुआ है। कैसे मिला है वह बैठ समझाते हैं। सन्यासी तो बता न सकें। आत्मा में ही सारा पार्ट भरा हुआ है। जो भी मनुष्य आते हैं 84 जन्मों कब एक जैसे फिचर्स मिल न सकें। थोड़ी2 चेंज जरूर होती है। तत्व भी सतो रजो तमो होते जाते हैं। हर जन्म के फिचर्स एक न मिले दूसरे से। यह भी समझने की बातें हैं। बाप रोज समझाते रहते हैं मीठे बच्चे बाप में कब भी संशय न लाओ। संशय और निश्चय दो अक्षर है ना। बाप भाना बाप। इसमें संशय तो हो न सकें। बच्चा कह न सकें मैं बाप को याद कर नहीं सकता हूं। तुम तो घड़ी2 कहते हो योग नहीं लगता। योग अक्षर ठीक नहीं है। तुम तो राजऋषि हो। राजयोगी नहीं। ऋषि अक्षर पवित्रता का है। तुम हो राजऋषि। जरूर पवित्र ही होंगे। थोड़ी बात में फेल होने से फिर राजाई मिल न सकें। प्रजा में चले जाते हैं। कितना घाटा पड़ जाता है। नम्बरवार तो पद होते हैं ना। एक का पद न मिले दूसरे से। यह बेहद का बनाया बनाया ड्रामा है। सिवाय बाप के कोई समझा न सकें कि बेहद का ड्रामा कैसे रिपीट होता है। तो तुम बच्चों को कितनी खुशी होती है। जैसे बाप के बुद्धि में सारा ज्ञान है वैसे तुम्हारे बुद्धि में भी है। बीज और झाड़ को समझना है। मनुष्य सृष्टि रूपी बेहद का झाड़ है। इनके साथ बनियन ट्री का भी विशाल एक्युरेट है। बुद्धि भी कहती है हमारा आदी सनातन देवी-देवता धर्म का जो थुर था वह अभी प्रायः लोप हो गया है। बाकी सभी धर्मों की इतनी टार-टारियां आद खड़ी हैं। ड्रामा अनुसार यह सभी भी होनी ही है। ड्रामा में सब नूंध है। इसमें घृणा नहीं आती। नाटक में कब एक्टर्स को घृणा आयेगी क्या। बाप कहते हैं तुम पतित बन गये हो फिर पावन बनना ही है। तुम जितना सुख देखते हो उतना और कोई देख न सकें। तुम हीरो-हीरोईन हो। विश्वपर राज्य करने वाले हो। तो अथाह खुशी होनी चाहिए ना। भगवान पढ़ाते हैं। कितना रेगुलर पढ़ना चाहिए। इतनी खुशी होनी चाहिए। बेहद का बाप हमको पढ़ाते हैं। राजयोग भी बाप ही सिखलाते हैं। कोई शरीरधारी सिखला न सकें। बाप ने आत्माओं को सिखाया है। आत्मा ही धारण करती है। बाप एक ही बार आते हैं पार्ट बजाने। आत्मा ही पार्ट बजाकर एक शरीर छोड़कर दूसरा लेती है। तो अपने को आत्मा समझना चाहिए ना। आत्माओं को बाप पढ़ाते हैं। देवताओं को नहीं पढ़ावेंगे। वहां तो देवताओं को देवता ही पढ़ावेंगे। संगम युग पर ही बाप पढ़ाते

हैं। पुरुषोत्तम बनने लिए तुम ब्राह्मण पढ़ते हो। यह पुरुषोत्तम संगम युग भी एक ही है। तुम जब पुरुषोत्तम बनते हो। सत का संग अभी यह है। सत्य बाबा सत्य बनाने वाला बेहद का बाप एक ही है। सच्चा सत का संग इसको कहा जाता है। संग तारे कुसंग बोरे। पढ़ाई पर पूरा ध्यान देना है। टाईम थोड़ा है। शरीर भी भरोसा थोड़े ही है। जो करना है सो कर लेना चाहिए। अज्ञान काल में भी 60 वर्ष के बाद विल करना चाहिए। इनको इतना, इनको इतना सभी हिसाब किताब पूरा कर जाकर वानप्रस्ती बने। बाप भी कहते हैं जितना पढ़ेंगे लिखेंगे होंगे नवाब। खेलेंगे पिलेंगे, पढ़ेंगे नहीं तो उतना ऊंच पद पा नहीं सकेंगे। पढ़ाई रेगुलर जरूर चाहिए। पढ़ना है कढ़ना है। फिर खाद निकल जावेगी फिर आत्मा सच्चा सोना बन जावेगी। अभी समय बाकी थोड़ा है। यह है अन्तिम जन्म। जो अच्छी रीत पढ़ेंगे तो पद भी पावेंगे। बाप जानते हैं इन बच्चे यह अवगुण है। इन में भी है। यह बहुतों का कल्याण करते हैं। यह तो फर्स्ट क्लास बच्चे हैं। हजारों लाखों का कल्याण करते हैं। अभी तुम बच्चों का धंधा ही यह है। बाप का मैसेन्ज देना है। दो बाप हैं। एक लौकिक हद का, दूसरा पारलौकिक बेहद का। पारलौकिक बाप कहते हैं मुझे याद करो तो यह वरसा मिलेगा। भारत की विश्व की बादशाही जरूर थी। वहां दुःख का नाम निशान नहीं था। तो इसके लिए पूरा पुरुषार्थ करना है। व्यापारी वह जो पूरा व्यापार कर दिखावे। गृहस्थ व्यवहार में भी रहो। इसमें रहते पवित्र बनना है। दैवीगुण भी धारण करनी है। जन्म-जन्मान्तर के पाप किये हुये हैं। फिर तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने की युक्ति भी बाप बतलाते हैं। मुझे याद करो तो तुम्हारे सब पाप कट जावेंगे। तमोप्रधान से सतोप्रधान कैसे बनते हो सारा ज्ञान बुधि में है। और कोई यह ज्ञान दे न सके।

तुम बच्चों को बहुत खबरदार रहना है। यह पाप नहीं चाहिए वैसे कर्म हम करेंगे हमको देख और भी करेंगे। मैं नवाबजादी हो रहूंगा तो और भी बन जावेंगे। तुम बच्चों को तो बिल्कुल हीसाधारण रहना है। नवाबी का ख्याल अन्दर में न आना चाहिए। सभीबिमारियां आद उतरेंगी योगबल से। विकर्म विनाश होते जावेंगे। आयु भी बड़ी होगी। योग में यह ताकत है। योग के लिए मनुष्य कितना भटकते रहते हैं। तुम से भी राय पूछते हैं। तुम राय देंगे तो सब जाग पड़ेंगे। परन्तु वह अजन समय पर होगा। अभी नहीं जायेंगे। रेवलेशन हो जाये। बाबा के पास ढेर आकर इकट्ठे हो जाये। बाबा ही तंग हो जावेंगे। यह छिप जावेगा। आगे चल कर तुम देखेंगे क्या होता है। गायन भी है ना अहो प्रभु.... लीला यहां करते हैं। मनुष्य को देवताबनाने की कितनी बड़ी लीला है। क्या होता है आगे चल कर फिर तुम देखेंगे। विनाश भी तो होना ही है। मिरवा मौत ... जंगल की आग लगनी है। तुम्हारी आत्मा पूरा बनती है। तुम्हारे शरीर को आग नहीं लगेगी। बाबा ने कहा है तुम ऐसे बैठे2 शरीर छोड़ देंगे। समझते हो यह कोई बड़ी बात नहीं। बाप को याद करते2 चले जाते। वह लोग ब्रह्म को याद करते2 भी शरीर छोड़ देते हैं। यह कोई बड़ी बात नहीं है। बैठे2 ध्यान में चले जाते हैं ना। शरीर जड़ हो जाता है तो फिर बैठ न सके। आत्मा चली जाती है। वह बैठते ही ऐसे है समझते हैं हम अभी जाते हैं। आत्मा निकल जावेगी। शरीर टेक पर हो रहेगा। तो मनुष्य समझते ध्यान में बैठा है। हार्टफेल भी बैठे2 होता है ना। हार्ट फेल का मौत सहज है। तुम भी कहते हो मौत हो तो ऐसा हो। खुशी से अपने घर जाना है। यह बेहद की बात है। बाप कहते हैं तुम्हारी कट निकल जावेगी। फिर तुम ऐसे ही शरीर छोड़ देंगे। बन्धन वाला तो यह भी था ना। सभी कुछ था। बाप ने प्रवेश किया तो सभी कुछ दे दिया। झट सौदा कर लिया। बाबा यह सभी कुछ लो। सभी कुछ दे दिया तो राजाई भी जरूर मिलेगी ना। सिखलाते हैं बाप के आगे सरेन्डर करो। कोई भूख थोड़े ही मरेंगे। बिल्कुल नहीं। बाप किसको भूख थोड़े ही मारेंगे। शिव बाबा का बन जाने से फिर बुधि का ताला भी खुल जाता है। यह सरेन्डर हुआ तो इनका भी ताला खुल गया ना। सभी कुछ बाबा का है। पहले नम्बरवन वाला ही तो बाजी जावेंगे ना। इनको ही आवेगा बाबा से सौदा तो कर लेवें। भूख तो मरना नहीं है। सभी कुछ मिलता रहता है। अच्छा बच्चों को गुडमार्निंग और नमस्ते।